शेखीबाज मक्खी की कहानी
www.bhartihindi.com

शेखीबाज़ मक्खी का सारांश

शेखीबाज मक्खी कहानी में लेखक योगेश जोशी ने लिखा है कि एक जंगल में एक शेर भोजन करके आराम से सो रहा था। वह कई दिनों से नहाया नहीं था। मक्खी उडती हुई आई और उसे परेशान करके कान के भिन्न भिन्न करने लगी। शेर को भिन्न भिन्न की आवाज से नींद नहीं आ रही थी।

2. शेखीबाज मक्खी

एक था जंगल। उस जंगल में एक शेर भोजन करके आराम कर रहा था। इतने में एक मक्खी उड़ती-उड़ती वहाँ आ पहुँची। शेर ने दो-तीन दिनों से स्नान नहीं किया था। इसलिए, मक्खी शेर के कान के एकदम पास भिन-भिन-भिन करने लगी। शेर को बहुत मुश्किल से नींद आई थी। उसने पंजा उठाया। मक्खी उड़ गई ... लेकिन फिर से शेर के कान के पास भिन-भिन शुरू हो गई। अब शेर को गुस्सा आया।

वह दहाड़ा—अरे मक्खी, दूर हट। वरना तुझे अभी जान से मार डालूँगा।

1

वह गुस्सा हो गया और मक्खी को भाग जाने के

शेखीबाज मक्खी की कहानी

लिए कहा। लेकिन वह बड़ी शेखीबाज मक्खी थी। उसने जंगल के राजा शेर को लड़ने की चुनौती दी। शेर को गुस्सा आ गया। उसने कान के पास पंजा मारा ,लेकिन लेकिन मक्खी तो उड़ गयी ,लेकिन शेर का कान छिल गया। इस प्रकार बार बार प्रहार करने के कारण शेर ही घायल हो जाता और मक्खी उड़ जाती। अंत में शेर थक कर उब गया। उसने मक्खी के आगे हाथ जोड़ कर कहा कि तुम जीती और मैं हारा।

मक्खी शेर को हरा कर घमंड में चूर हो गयी। उसे रास्ते में हाथी मिला। हाथी को उसने प्रणाम करने को कहा तो हाथी ने सोचा कि मैं किस पागल से बहस करूँ और अपना वक्त बर्बाद करूँ। उसने सूंढ़ उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे बढ़ गया। लोमड़ी यह सब दूर से देख रही थी। मक्खी ने उसे भी प्रणाम करने को कहा तो वह प्रणाम कर बोली कि आप धन्य हो। लेकिन मकड़ी तो आपको गाली दे रही है। आप उसकी खबर ले लो।

यह सुनकर मक्खी बोली कि मैं छुटकी बजाकर मकड़ी का काम तमाम कर देती हूँ। और वह मकड़ी की ओर झपटी और मकड़ी के बनाये जाल में फँस गयी। वह जितनी बाहर निकलने का प्रयास करती ,उतना ही फँसती जाती। इस प्रकार मक्खी थककर हार गयी। यह देखकर लोमड़ी मुस्कराती हुई आगे बढ़ गई।